अध्याय 18

जंगल में यित्रो का मूसा से भेंट करना

इस्राएलियों के "परमेश्वर के पर्वत" पर पहुँचने के बाद, मूसा का ससुर, यित्रो, उससे भेंट करने के लिए आया, और अपने साथ उसकी पत्नी सिप्पोरा, और उनके दोनों पुत्रों गेर्शोम और एलिएजेर को भी लेकर आया। निर्गमन 18 यित्रो से मूसा की भेंट का वर्णन करता है (18:1-6)।

मूसा और यित्रो द्वारा एक दूसरे का अभिवादन करने के बाद (18:7), मूसा ने अपने ससुर को वह सब बताया कि किस प्रकार यहोवा ने इस्राएल को मिस्र और यात्रा के कष्टों से छुटकारा दिया था (18:8)। यह सुनकर, यित्रो ने अपने दामाद के साथ आनन्द किया, परमेश्वर की प्रशंसा की, और उसे बलिदान भी चढ़ाए (18:9-12)।

अगले दिन यित्रो ने मूसा को पूरे दिन बैठकर लोगों का न्याय करते देखा, एक ऐसी प्रक्रिया जिसने मूसा और लोगों को थका दिया था (18:13)। उस संध्या यित्रो ने मूसा से उसकी अगुवाई के विषय में बातें की। उसने उससे विनती की और कहा कि वह इसे अपना कार्य बना ले और लोगों की खातिर परमेश्वर से मध्यस्थता करे और लोगों को व्यवस्था सिखाया करे। हालाँकि, यित्रो ने सुझाव दिया, वह छोटे मुकद्दमों के न्याय के लिए भले पुरुषों को नियुक्त करे, और केवल बड़े मुकद्दमे स्वयं निपटाया करे (18:14-23)।

मूसा ने अपने ससुर की सलाह मान ली (18:24-26)। इसके बाद "मूसा ने अपने ससुर को विदा किया," और यित्रो अपने देश वापस चला गया (18:27)।

यित्रो का मूसा के पास आना (18:1-7)

[1]जब मूसा के ससुर मिद्यान के याजक यित्रो ने यह सुना कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल के लिये क्या क्या किया है, अर्थात् यह कि किस रीति से यहोवा इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आया, [2]तब मूसा का ससुर यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जो पहले नैहर भेज दी गई थी, [3]और उसके दोनों बेटों को भी ले आया; इनमें से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम रखा था: "मैं अन्य देश में परदेशी हुआ हूँ।" [4]और दूसरे का नाम उसने यह कहकर एलीएजेर अर्थात्, ईश्वर मेरा सहायक है रखा: "मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया।" [5]मूसा की पत्नी और पुत्रों को, उसका ससुर यित्रो संग लिए मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहाँ परमेश्वर के पर्वत के

पास उसका डेरा पड़ा था। [6]और आकर उसने मूसा के पास यह कहला भेजा, "मैं तेरा ससुर यित्रो हूँ, और दोनों बेटों समेत तेरी पत्नी को तेरे पास ले आया हूँ।" [7]तब मूसा अपने ससुर से भेंट करने के लिये निकला, और उसको दण्डवत् करके चूमा; और वे परस्पर कुशल क्षेम पूछते हुए डेरे पर आ गए।

आयत 1. "परमेश्वर के पर्वत" पर मूसा से एक अतिथि मिलने आया (18:5), जो है, होरेब या सीनै (3:1; 4:27; 24:13)। उसका **ससुर**, **यित्रो**, जिसे हर कहीं रूएल कहा जाता था (2:18; 3:1; 4:18), वह उससे मिलने आया। उसका वर्णन पुस्तक में पहले दिया गया है, जब मूसा मिस्र से भागा था और उसके घर पर उसे शरण, पत्नी और एक पेशा भी दिया। **मिद्यान के एक याजक** के रूप में, संभवतः, यित्रो केवल एकमात्र सच्चे परमेश्वर याहवेह का एक याजक था। यित्रो इसलिए आया क्योंकि उसने उन सब बातों के विषय में **सुना था** जो **परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के लिए किया था।** इस्राएल के शक्तिशाली छुटकारे के द्वारा राष्ट्रों को उसके विषय में जानने की - परमेश्वर की योजना - कार्य कर रही थी।

आयत 2. यित्रो अपने साथ **मूसा की पत्नी सिप्पोरा** को लेकर आया था। शब्द पाठक को केवल यह जानकारी देता है कि मूसा ने उसे **दूर भेज दिया था**, यह नहीं कि उसने ऐसा क्यों किया था। शब्द שִׁלַּח *(शालाक)*, का अनुवाद, "दूर ... भेज दिया," बाद में पुराने नियम में तलाक के लिए उपयोग किया गया है। यहाँ पर इसका 18:27 के समान एक तटस्थ उत्तर है, जहाँ पर इसे यित्रो के प्रस्थान के विषय में उपयोग किया गया है।[1]

चूंकि सिप्पोरा का पिछला वर्णन 4:24-26, में "लहू बहाने वाला पति" की घटना में हुआ था, विद्वान प्रायः अनुमान लगाते हैं कि मूसा ने उसे और अपने दोनों पुत्रों को वहाँ से, उसके पिता, यित्रो के पास वापस भेज दिया था। शायद उसे यह समझ में आ गया था कि उसका लक्ष्य कितना खतरनाक था और वह अपने परिवार की सुरक्षा करना चाहता था। एक अन्य सम्भावना यह भी है कि सिप्पोरा मूसा के साथ मिस्र में ही थी और उसने निर्गमन का अनुभव किया था, परन्तु मूसा ने उसे थोड़े समय पहले ही उनके छुटकारे का समाचार देने के लिए यित्रो के पास भेज दिया था।

आयतें 3, 4. यित्रो और उसकी पुत्री सिप्पोरा के साथ **उसके दो पुत्र भी थे।** पहले पुत्र को **गेर्शोम** नाम दिया गया था जिसका अर्थ है "वहाँ पर एक परदेशी।" यह नाम मूसा के इस कथन के कारण दिया गया था कि, **"मैं एक अन्य देश में परदेशी हूँ"** (2:2 पर टिप्पणियाँ देखें)। दूसरा पुत्र, जिसका वर्णन पुस्तक में पहले नहीं किया गया, उसका नाम **एलिएजेर** रखा गया था, जिसका अर्थ है "परमेश्वर मेरा सहायक है।" यह नाम मूसा की इस घोषणा के ऊपर आधारित था कि, **"मेरे पिता का परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर, मुझे फ़िरौन की तलवार से छुड़ाया।"**

आयतें 5-7. मूसा के **ससुर** ने उसके पहुंचने से पहले संदेश भेजने के द्वारा भेंट करने की अपनी मंशा की घोषणा की। जब यित्रो मूसा की **पत्नी** और उसके **दो पुत्रों को लेकर** इस्राएलियों की छावनी में पहुंचा, मूसा उसे देखकर प्रसन्न हुआ और

व्यवहारिक तौर पर दण्डवत् करने और उसके बाद उसे चूमने के द्वारा उसका अभिवादन किया। इसके बाद मूसा ने यित्रो को अपने **तम्बू** में आमंत्रित किया।

इस भेंट और इसके परिणाम के विषय में सबसे मनोहर बात संभवतः यह है कि "यह कब हुई थी?" शब्द में इसका स्थान संकेत करता है कि यह अमालेकियों से युद्ध के पश्चात और सीनै पर्वत पर व्यवस्था के मिलने से पहले हुई थी। हालाँकि, टिप्पणीकार प्रायः यह दावा करते है निर्गमन 18 की घटना कालक्रम से बाहर है। बाइबल के विवरण सदैव सख्त काल क्रमानुसार नहीं लिखे गए। यह तथ्य निर्गमन में आखिरी विपत्ति के विवरण और फसह की स्थापना में प्रत्यक्ष है। दो संभव विचारों पर ध्यान किया जाना चाहिए।

1. परमेश्वर की "विधियों" और "व्यवस्था" के सन्दर्भ संकेत करते हैं कि यित्रो की भेंट *व्यवस्था के दिए जाने के बाद* हुई थी।[2] मूसा ने कहा उसका कार्य "परमेश्वर की विधि और व्यवस्था समझाना था" (18:16), और यित्रो ने मूसा को सलाह दी कि "वह उन्हें परमेश्वर की विधि और व्यवस्था की शिक्षा दे" (18:20)। इसी कारण, यह प्रतीत होता है कि मूसा को पहले ही व्यवस्था मिल चुकी थी। इस अनुवाद के पक्ष में यह तथ्य है कि यह घटना **परमेश्वर के पर्वत**, या सीनै पर्वत पर हुई थी (18:5)। आगे, विवरण में "यात्रा की कथाओं" कि विशिष्टताएं नहीं हैं जो उससे पहले हुईं थीं, जो यात्रा और नए स्थान में इस्राएलियों के आने के विषय में बता रही थीं। (यहाँ तक कि अध्याय 19 में वाचा के बाँधने में ये विशिष्टताएं हैं।)

यदि वर्णित घटना काल क्रमानुसार नहीं है - यह ऐसे है कि, यदि यह इस्राएल द्वारा सीनै पर्वत पर बिताए गए समय के दौरान हुआ जबकि तम्बू को बनाया ही जा रहा था - तो इसे स्थान पर सम्मिलित क्यों किया गया? इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि इसने लेखक द्वारा इसे बाद में सम्मिलित किए जाने की बजाए यहाँ पर सम्मिलित किए जाने के उद्देश्य को पूरा किया। वह उद्देश्य क्या था, उसे स्पष्ट तौर पर जान पाना असंभव है। हो सकता है कि यह घटना यहाँ पर इसलिए सम्मिलित की गई ताकि यहोवा ने किस प्रकार इस्राएल की आवश्यकताएँ पूरी की उसका आगे प्रदर्शन किया जाए। उसने छुटकारा, मार्गदर्शन (बादल और आग के द्वारा), पानी, भोजन और सुरक्षा (शत्रुओं के ऊपर विजय) प्रदान की थी। इस घटना का वर्णन करने के द्वारा शब्द दिखाता है कि यहोवा अपने लोगों के संगठनों की आवश्यकताएं पूरा करता है।

नहूम एम. सरना इस घटना को क्रम से बाहर रखने की दो संभव कारणों का सुझाव दिया है। पहला यह कि, विवरण कथा जिस गति से चलता रहा उससे "अति-आवश्यक तनाव मुक्ति" प्रदान करता है। दूसरा, पहले भाग कथा को मिद्यानियों (या कनानियों) के मित्रतापूर्ण सम्बन्ध - और इसके विपरीत - अध्याय अमालेकियों के विश्वासघाती स्वभाव से जोड़ता है अध्याय 17 में. इसी के समान, "विधियों और व्यवस्था" पर बल देना (18:20) अध्याय के पिछले भाग में व्यवस्था की वाचा के लिए एक पुल का निर्माण करता है जिसका परिचय अध्याय 19 में दिया जाएगा।[3]

2. यित्रो की भेंट सीनै पर्वत पर *व्यवस्था के दिए जाने से पहले* हो सकती

है। यदि मूसा ने अब तक दस आज्ञाएँ प्राप्त नहीं की थीं, तो वाक्यांश "विधियाँ और व्यवस्था" परमेश्वर के द्वारा दिए गए नियमों का सन्दर्भ हो सकता है परन्तु उन्हें लिखा नहीं गया था। जेम्स बर्टन कोफ्फमन ने इस अभिव्यक्ति का समर्थन करते हुए यह पक्ष लिया, "विधियों और व्यवस्था" का उन "दस आज्ञाओं से कोई सन्दर्भ नहीं था, जो अभी नहीं दिए गए थे, परन्तु इसका संदर्भ नियम और शर्तों उस व्यापक समूह के लिए है जो मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार लोगों को बताए थे।"[4] दूसरे शब्दों में, यह घटना मूसा के व्यवस्था प्राप्त करने से पहले हुआ था, इसके बाद उसने लोगों को न्याय परमेश्वर कि उस इच्छा के अनुसार किया जो उसे उस समय ज्ञात थीं। इसके बाद, "विधियाँ और व्यवस्था" और अधिक पूर्ण रूप से सीनै पर्वत पर दी जाएंगी।

अन्य सम्भावनाएं यह हैं कि यह भाव "पूर्वानुमानित" है, इस विषय में बात करना जो अभी होने वाली थी मानो वह अभी भी अस्तित्व में ही थी। इस "पूर्वानुमान" के अन्य उदाहरण निर्गमन में पहले पाए जा सकते है जहां "आज्ञाएँ" और "विधियाँ" (15:26) और "निर्देश" (*तोराह*, या "व्यवस्था"; 16:4) व्यवस्था के दिए जाने से पहले बोली गई हैं।

यित्रो का परमेश्वर के छुटकारे पर आनंद मनाना (18:8-12)

[8]वहाँ मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फ़िरौन और मिस्रियों से क्या-क्या किया, और इस्राएलियों ने मार्ग में क्या- क्या कष्ट उठाया, फिर यहोवा उन्हें कैसे-कैसे छुड़ाता आया है। [9]तब यित्रो ने उस समस्त भलाई के कारण जो यहोवा ने इस्राएलियों के साथ की थी, कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाया था, मग्न होकर कहा, [10]"धन्य है यहोवा, जिसने तुम को फ़िरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया, जिसने तुम लोगों को मिस्रियों की मुट्ठी में से छुड़ाया है। [11]अब मैं ने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है; वरन् उस विषय में भी जिससे उन्होंने इस्राएलियों के साथ अहंकारपूर्ण व्यवहार किया था।" [12]तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर के आगे भोजन करने को आया।

आयत 8. मूसा ने यित्रो को वह सब बताया **जो यहोवा ने** इस्राएल **के लिए** उन्हें मिस्र से छुड़ाते समय, लाल सागर से होते हुए, और मार्ग की **सभी कठिनाइयों में** किया था। इन कठिनाइयों में उनकी भोजन और पानी की कमियाँ, और इसके साथ ही अमालेकियों के द्वारा आक्रमण भी सम्मिलित होगा।

आयतें 9-11. यित्रो प्रभावित था। मूसा ने जो परमेश्वर के कार्य के विषय में कहा था, उसने उन्हीं शब्दों को दोहराया, और उसके समान शब्दों का उपयोग **यहोवा** की स्तुति और उसकी महानता की घोषणा करने के लिए किया था। उसके बाद उसे समझ में आया कि याहवेह **सब देवताओं से महान** था। जॉन आई. डरहम

ने कहा, "... इस कथन में यह अंतर्निहित है कि यित्रो विश्वास करता है, मानो उसने विश्वास *किया* था, याहवेह देवताओं के मध्य एक परमेश्वर है। निस्संदेह उसने यह विश्वास किया था, कि याहवेह दूसरों से महान है। अब उसके इस विश्वास में पुष्टि हो चुकी थी कि वह सही था।"[5] यित्रो के शब्द एक ईश्वरवाद को नहीं प्रकट नहीं करते जो कि बाद में इस्राएल के धर्म की विशेषता बन गया, क्योंकि एक ईश्वरवाद का अर्थ एक परमेश्वर पर विश्वास करना और अन्य का इनकार करना है। इसके विपरीत, यित्रो का कथन सहिष्णु एक ईश्वरवाद (एक ईश्वर पर विश्वास करना परन्तु अन्य के अस्तित्व से इनकार करना) अथवा एकैकापी ईश्वरवाद (अनेक ईश्वरों में से एक पर विश्वास करना) का प्रदर्शन कर सकता है। सहिष्णु एक ईश्वरवाद एक ईश्वर की आराधना है जो *अकेला* स्तुति के योग्य है, यदपि दूसरे देवताओं के अस्तित्व को भी माना जाता है। एकैकापी ईश्वरवाद, *दूसरों* अस्तित्व को अस्वीकार किए बिना जो कि स्तुति के योग्य हो सकते हैं, एक परमेश्वर में विश्वास करना है।

आयत 11 का दूसरा आधा भाग अधिक कठिन है। जब शब्द कहता है कि **उन्होंने लोगों के विरुद्ध अहंकारपूर्ण व्यवहार किया था**, यह प्रत्यक्ष रूप से मिस्रियों के देवताओं के विषय में बात कर रहा है, और उस विचार को व्यक्त करता है कि वे देवता इस्राएल के प्रति व्यवहार करने में अहंकारी थे (देखें NRSV; NIV; CEV)। डरहम ने अनुवाद किया, "उन्होंने उनके विरोध में विद्रोहपूर्ण व्यवहार किया था" और कहा कि मिस्री देवताओं "में याहवेह के सम्बन्ध में उसके लोग इस्राएल के विरुद्ध काम करने के द्वारा विद्रोहपूर्ण कार्य किया था।"[6] डब्ल्यू. एच. जिस्पेन ने कहा कि यहाँ पर उद्दिष्ट अर्थ यह है कि "यहोवा उन सभी देवताओं से उन बातों में निश्चित रूप से महान है जिनमें मिस्री इस्राएलियों के विरुद्ध अभिमानी थे।"[7] मिस्र के देवताओं के द्वारा इस्राएल के साथ "अभिमानी" व्यवहार का विवरण संभवतः फ़िरौन (जिसे मिस्र के एक देवता के रूप में देखा जाता था) और जो लोग उन देवताओं की पूजा करते थे उनके द्वारा इस्राएलियों के प्रति दुर्व्यवहार का सन्दर्भ देने का एक तरीका था। 10:3 के अनुसार, फ़िरौन का पाप यह था कि उसने यहोवा के सामने दीन होने से इनकार कर दिया था। अन्य शब्दों में, वह अभिमानी और अहंकारी था।

आयत 12. इसके बाद यित्रो याहवेह के लिए बलिदान चढ़ाए। उसने **होमबलि चढ़ाई**, जिसमें पूरा पशु आग में भस्म हो जाता था। उसने बलियाँ भी चढ़ाईं, यह संभवतः उस के बराबर थी जिसे बाद में "मेलबलि" कहा जाएगा, जिसमें बलिदान का एक भाग वेदी पर अर्पित किया जाता था और शेष आराधकों के द्वारा खा लिया जाता था।[8] इस भेंट ने कई प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

1. क्या यित्रो ने स्वयं बलिदान चढ़ाए? इब्रानी शब्द לָקַח *(लकाच)*, जिसका अनुवाद "लिया" है (NASB; KJV; NKJV), यह अनेकार्थी है और इस सम्भावना की अनुमति देगा, परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं चाहेगा। कुछ संस्करण इस क्रिया का अनुवाद "लाया" (NRSV; NIV; REB; NAB) के रूप में किया है, जबकि अन्य इसे "चढ़ाया" (NJB; CEV) में करते हैं। यित्रो ने स्वयं ही

बलिदान चढ़ाए हों, या हो सकता है कि वह किसी और के द्वारा बलिदान किए जाने के लिए पशु लेकर आया था, हालाँकि वह स्वयं रीति-रिवाज और उसके बाद भोजन के लिए वहाँ उपस्थित था।

2. यदि यित्रो ने स्वयं बलिदान चढ़ाए थे, तो उसे ऐसा करने का अधिकार किसने दिया? यदपि मूसा को अभी व्यवस्था नहीं दी गई थी, व्यवस्था दिए जाने से पहले समस्त युग में बलिदान चढ़ाए जाते थे। संभवतः, परिवार के मुखिया के रूप में, मिद्यान के याजक के रूप में, और एक आदरणीय अतिथि के रूप में, यदि उसने ऐसा करने का चुनाव किया होगा तो यित्रो को बलिदान चढ़ाने का सौभाग्य मिला होगा।[9]

3. क्या बलिदान चढ़ाना निश्चयात्मक रूप से यह प्रदर्शित करते हैं कि यित्रो केवल एकमात्र यहोवा परमेश्वर में ही विश्वासी था? नहीं, क्योंकि प्राचीन निकट पूर्व में जिन देवताओं को शक्तिशाली समझा जाता था उनके लिए यही परंपरा थी, और यहाँ तक कि भी किसी अकेले देवता के विषय में (उसकी आराधना करते समय) ऐसे कहा जाता था मानो वही एकमात्र ईश्वर है।[10] फिर भी, जैसा कि पहले संकेत किया गया है, कि यित्रो याहवेह में एक सच्चा विश्वासी रहा होगा। यदि वह पहले ऐसा नहीं रहा होगा, तो इस अवसर पर - जो कुछ याहवेह ने अपने लोग इस्राएल के लिए किया था उस सब के विषय में सुनकर - हो सकता है वह एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वासी बन गया था।[11]

बलिदान चढ़ाने के बाद, यित्रो ने **हारून और इस्राएल के सभी पुरनियों** के साथ **भोजन** खाया। मूसा वर्णन इस भोजन के सम्बन्ध में नहीं किया गया है परंतु वह अवश्य ही वहाँ पर उपस्थित रहा होगा। भोजन को बाँटना महत्वपूर्ण हो सकता है। बलिदान, यह मानते हुए कि वे मेलबलियों के बराबर थे, उन्होंने निश्चित तौर पर भोजन के लिए समस्त माँस का प्रबंध किया था। चूंकि सभी पुरनिए उपस्थित थे, और चूंकि पुरनिए "समस्त इस्राएल के लोगों के समस्त विस्तार के प्रतिनिधि थे,"[12] एक भाव "समस्त" इस्राएल उपस्थित था।

इसके अतिरिक्त, भोजन को **परमेश्वर के सामने** खाया गया था, जो संकेत करता है कि इसका एक पवित्र उद्देश्य था। यह उद्देश्य दो लोगों के बीच में - यित्रो और इस्राएल के लोगों के बीच में - एक वाचा की पुष्टि करना था - एकदम उसी समान जैसे एक भोजन बाद में उस वाचा की पुष्टि प्रक्रिया का एक भाग बन गया जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ की थी (24:11)।[13] यदि इस भोजन ने दो लोगों के बीच एक वाचा पर मोहर लगाई, तो यह उस अच्छे सम्बन्ध की व्याख्या करा है जिसका अस्तित्व बाद में केनियों और इस्राएल ने था (न्यायियों 4:11-22; 1 शमूएल 15:6)। केनी लोग स्पष्ट तौर पर मिद्यानियों का परिवार था जिससे मूसा के ससुर का सम्बन्ध था (न्यायियों 4:11)।

यित्रो की मूसा को सलाह (18:13-27)

[13]दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा, और भोर से साँझ तक लोग

मूसा के आसपास खड़े रहे। 14यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या-क्या करता है, उसके ससुर ने कहा, "यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है? क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से साँझ तक तेरे आसपास खड़े रहते हैं?" 15मूसा ने अपने ससुर से कहा, "इसका कारण यह है कि लोग मेरे पास परमेश्वर से पूछने आते हैं। 16जब-जब उनका कोई मुक़द्दमा होता है तब तब वे मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच न्याय करता, और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें समझाता हूँ।" 17मूसा के ससुर ने उससे कहा, "जो काम तू करता है, वह अच्छा नहीं। 18इससे तू क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता। 19इसलिये अब मेरी सुन ले, मैं तुझ को सम्मति देता हूँ, और परमेश्वर तेरे संग रहे! तू इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुक़द्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुँचा दिया कर। 20इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह इनको जता दिया कर। 21फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छाँट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ से घृणा करने वाले हों; और उनको हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे। 22और वे सब समय इन लोगों का न्याय किया करें; और सब बड़े बड़े मुक़द्दमों को तो तेरे पास ले आया करें, और छोटे छोटे मुक़द्दमों का न्याय आप ही किया करें; तब तेरा बोझ हल्का होगा, क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएंगे। 23यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुँच सकेंगे।" 24अपने ससुर की यह बात मान कर मूसा ने उसके सब वचनों के अनुसार किया। 25अतः उसने सब इस्राएलियों में से गुणी पुरुषों को चुनकर उन्हें हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। 26और वे सब लोगों का न्याय करने लगे; जो मुक़द्दमा कठिन होता उसे वे मूसा के पास ले आते थे, और सब छोटे मुक़द्दमों का न्याय वे आप ही किया करते थे। 27तब मूसा ने अपने ससुर को विदा किया, और उसने अपने देश का मार्ग लिया।

आयतें 13, 14. पुरनियों के साथ भोजन करने के एक दिन बाद, यित्रो ने इस्राएल की न्यायिक प्रणाली को कार्य करते हुए देखा। **मूसा** अकेले ही **लोगों का न्याय करने बैठा, लोग जैसे ही खड़े हुए** और उसके सामने आने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे और वह उनके मुकद्दमे सुनता रहा। मूसा का न्याय करना "सन्दर्भ के अनुसार इसका अर्थ है पक्षों के मध्य 'परमेश्वर के नियमों और व्यवस्था के आधार पर कानूनी मामलों में मध्यस्थता करना' (आयत 16)।"[14] यित्रो को समझ आया कि इस प्रणाली को सुधार की आवश्यकता थी। सुधार के लिए उसका पहला कदम मूसा से यह पूछना था कि **वह अकेले ही** लोगों **का न्याय क्यों कर रहा था** तो उनमें कुछ लोगों के उनका मुकद्दमा सुने जाने के लिए दिन भर प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

आयतें 15, 16. फलतः **मूसा** ने उत्तर दिया, कि उसे परमेश्वर का प्रतिनिधि

के रूप में चुना गया था। इसी कारण, यदि **लोगों** को किसी विषय में परमेश्वर के विचार जानने की आवश्यकता पड़ती थी, तो उन्हें आकर उससे पूछना पड़ता था। **परमेश्वर से पूछने के लिए** मूसा से पूछना पड़ता था। यदि लोगों का एक दूसरे के विरुद्ध **एक झगड़ा** होता, तो मूसा को यह पता करने के लिए सशक्त किया गया था कि कौन सही था। यदि परमेश्वर किसी पहले प्रकाशन के माध्यम से पहले से ही प्रकट नहीं करता था, तो मूसा परमेश्वर से पूछता और परमेश्वर उसे एक उत्तर देता था। मूसा ने इस्राएल को **परमेश्वर की विधियाँ और व्यवस्था समझाने** के द्वारा अपने कर्तव्यों को पूरा किया।

आयतें 17, 18. यित्रो ने यह कह कर उत्तर दिया, **"जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं है।"** कार्य-प्रणाली में सुधार की आवश्यकता थी, क्योंकि मूसा के लिए एक ऐसे कार्य को संभालना कठिन था, जो स्वयं उस से बड़ा था, और क्योंकि **लोगों** के लिए, अपने मुकदमों की सुनवाई हेतु, घंटों तक प्रतीक्षा करना कठिन था।

आयतें 19, 20. इसके फलस्वरूप, यित्रो ने सुझाव दिया कि मूसा अपनी भूमिका निभाने के प्रति अधिक चयनात्मक बने। उसने दो अनुरोध किए। पहला, उसने कहा, **"परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधि बन।"** मूसा प्रार्थना में उनकी समस्याएं और **झगड़े** परमेश्वर के सम्मुख ला सकता था। दूसरा, फलतः, उसने कहा, "लोगों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि बन।" मूसा **विधि और व्यवस्था प्रकट कर करके, जिस मार्ग पर उन्हें चलना था, और जो-जो काम उन्हें करना था** उन्हें उसकी शिक्षा दे सकता था।

आयत 21. यित्रो ने आगे अनुरोध किया कि मूसा प्रतिदिन के झगड़ों को निपटारा उन पुरुषों पर छोड़ दे जिन्हें वह लोगों के ऊपर नियुक्त करेगा। प्रत्यक्ष रूप से, इस्राएल को उच्च न्यायालय और निचला न्यायालय के समान मिलने वाला था, क्योंकि पुरुषों को **हजारों**, **सैकड़ों**, **पचासों**, और **दसों** के ऊपर ठहराया जाएगा।

इन पुरुषों को इस कार्य के योग्य होना था। उन्हें **योग्य पुरुष**, या सक्षम और बुद्धिमान पुरुष होना था, **जो परमेश्वर का भय रखते थे**। ऐसे पुरुष जानबूझकर किसी के साथ गलत नहीं करेंगे। **सत्य के पुरुषों** के रूप में, वे मुकद्दमा सुनते समय परमेश्वर की इच्छा की खोज करेंगे। वे ऐसे पुरुष होंगे **जो कपट के लाभ से घृणा करते हैं**, और उन्हें रिश्वत नहीं दी जा सकती।

आयतें 22, 23. ये लोग अधिकांश मुकद्दमों को सुनने के लिए मूसा का स्थान लेने वाले थे, जिन्हें **छोटे मुकद्दमों** की श्रेणी में रखा जाएगा। जब भी एक **बड़ा मुकद्दमा उठ** खड़ा हुआ, तो मुकद्दमे को न्याय के लिए मूसा के सामने लाया जाएगा। उसके बोझ को दूसरों के साथ बांटने की प्रणाली मूसा के लिए कार्य करना सरल बना देगी, और वह उसके **सहने के योग्य बन जाएगा**। इसके अतिरिक्त, नए प्रबंध से **लोगों** को लाभ मिलेगा, क्योंकि उनके मुकद्दमे समय से सुने जाएंगे, और इस कारण लोग **अपने स्थानों तक शांति से जाएंगे**। वे संतुष्टि का अनुभव करते हुए अपने घरों तक जाएंगे, उस असंतुष्ट व्यवहार के विपरीत जो उनमें उस समय अवश्य उत्पन्न हुआ होगा जब उन्हें मूसा को अपनी बातें सुनाने के लिए घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ी थी।

यद्यपि सुझाव उसकी ओर से आया था, फिर भी यित्रो ने इस बात पर बल दिया कि यदि **परमेश्वर** उसे ऐसा करने की आज्ञा दे तो ही उसे उसके सुझावों पर कार्य करना चाहिए[15] इसी कारण, इस नई संस्था की स्थापना को परमेश्वर की स्वीकृति मिलनी चाहिए थी (देखें गिनती 11:16, 17, 24, 25)।

आयतें 24-26. मूसा को इसका श्रेय जाता है कि, उसने **अपने ससुर की बात को सुना और जो कुछ उसने कहा था वह सब किया** (18:17-23)। वह आसानी से तर्क कर सकता था: "मैं इस्राएलियों का अगुवा हूँ। मैंने परमेश्वर से बात की है, उसने अपनी इच्छा को मुझ पर प्रकट किया है। मैं इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाल लाया, और मैं जनता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। यह मिद्यानी कौन है जो यह समझता है कि यह मुझे बता सकता है कि मुझे क्या करना है?" मूसा का दूसरों के सुझाव स्वीकार करने की इच्छा उसकी नम्रता का प्रमाण है (देखें गिनती 12:3)।

इस वर्णन की ध्यान देने योग्य विशेषता इस बात की पुष्टि है कि इस्राएल की न्यायिक प्रणाली की उत्पत्ति एक गैर-इस्राएली, मिद्यानी याजक यित्रो के सुझाव के द्वारा हुई।[16] कोई भी इस्राएली लेखक इस प्रकार की कहानी नहीं गढ़ नहीं पाया होगा; इस के सम्मिलित किए जाने की एकमात्र विवेकपूर्ण व्याख्या यह है कि यह घटना वास्तव में हुई थी।

आयत 27. यित्रो के सुझाव देने और उसके स्वीकार किए जाने के बाद, **मूसा ने अपने ससुर को विदा किया**। इसके बाद यित्रो मिद्यान को लौट गया।

गिनती 10 संकेत करता है, सीनै पर एक वर्ष के बाद जब इस्राएल पर्वत से जाने और कनान की यात्रा के लिए तैयार था, "मूसा के ससुर, मिद्यानी रूएल का पुत्र, होबाब," इस्राएल के साथ था। मूसा ने अपने साले होबाब को आमंत्रित किया कि वह इस्राएलियों के साथ उनकी यात्रा में चले (गिनती 10:29)। उसने पहले तो मना किया और अपने देश लौटने पर बल देता रहा, परन्तु मूसा ने उससे वहाँ ठहरे रहने और इस्राएल के लिए "आंखें" बनने की विनती की क्योंकि वह उस क्षेत्र को जानता था। वास्तव में, मूसा ने उससे प्रतिज्ञा की और कहा कि यहोवा उसके साथ भी इस्राएलियों के समान ही व्यवहार करेगा (गिनती 10:30-32)। शब्द यह नहीं कहता कि होबाब ने मूसा का प्रस्ताव स्वीकार किया या नहीं, हालाँकि कुछ केनी बाद में कनान में इस्राएलियों के मध्य रह रहे थे (न्यायियों 1:16; 4:11; 1 शमूएल 15:6; 27:10)।[17]

कुछ टिप्पणीकार यह मानते हैं कि गिनती 10 और निर्गमन 18 एक ही अवसर के विषय में बताते हैं।[18] यद्यपि यह संभव है कि ये दोनों घटनाएं अलग-अलग हो सकती हैं। एक सम्भावना यह भी है कि यित्रो मिद्यान को लौट गया और उसने सीनै पर इस्राएल के साथ होबाब को छोड़ दिया जो वहाँ पर तब तक ठहरा रहा जब तक कि इस्राएली कनान के लिए प्रस्थान करने को तैयार नहीं हो गए।

अनुप्रयोग

यित्रो: अपरिचित स्थानों में सहायता (अध्याय 18)

क्या आपने अपरिचित स्थानों में, एक अचंभित करने वाले स्रोत से सहायता पाई है? संभवतः आप एक अनजाने नगर में, खोये थे, और सोच रहे थे कि आगे क्या करना है, और एक ऐसा व्यक्ति जिससे आप कभी नहीं मिले वह आपकी सहायता करने के लिए रुका। हो सकता है, अपने स्वयं को झूठे आरोपों में पाया, और ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आपके विरुद्ध था, परन्तु इसके बाद कोई ऐसा जिसे आपका शत्रु समझा जाता था वह सत्य बताने के द्वारा आपके लिए खड़ा हुआ। यित्रो में, मूसा ने एक अपरिचित स्थान मिद्यान में, एक गैर-इस्राएली के द्वारा में सहायता पाई।

उसने मूसा को तब एक घर प्रदान किया जब उसके पास कुछ नहीं था। जब मूसा मिस्री की हत्या और उसे दफनाने के बाद मिस्र से भागा, तो वह बेघर और अकेला था। परमेश्वर की विधि के द्वारा, मूसा ने यित्रो की पुत्रियों की उस समय सहायता की जब वे अपने भेड़ों के झुण्ड को कुएँ के पास पानी पीने के लिए लाई थीं। इसके बाद यित्रो ने मूसा का अतिथि-सत्कार किया। अंत में उसने, मूसा के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया, मूसा के साथ अपने घर को साझा किया, मूसा को चरवाहे के रूप में एक कार्य दिया, और ऐसा प्रतीत होता है उसने मूसा से ऐसा व्यवहार किया मानो वह उसका अपना ही पुत्र था।

उसने मूसा के परिवार की देखभाल उस समय की जब मूसा नहीं कर सकता था। जब यित्रो सीनै पर्वत पर मूसा से भेंट करने आया, तो वह अपने साथ मूसा की पत्नी और उसके दोनों पुत्रों को भी लाया (18:1-4)। मूसा ने संभावित तौर पर मिद्यान से जाने के कुछ समय बाद संभवतः अपनी पत्नी की सुरक्षा के लिए दूर भेज दिया था। यित्रो ने सिप्पोरा और बालकों की देखभाल उनके मूसा से मिलने के समय तक की थी।

उसने मूसा को उस समय प्रोत्साहित किया जब हो सकता है उसके अपने लोगों ने उसे निराश किया हो। जब यित्रो मूसा के पास गया, तो उसने पहले ही वह बातें सुन ली थीं जो परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकालते समय की थीं। उसने "उस समस्त भलाई के ऊपर आनन्द किया जो परमेश्वर ने इस्राएल से की थी" (18:9), उसने यहोवा को धन्य कहा (18:10, 11), और परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए (18:12)। "परमेश्वर के सम्मुख" इस्राएल के अगुवों समेत भोजन ग्रहण करने के द्वारा, यित्रो ने अपने लोगों को इस्राएल के साथ एक वाचा के सम्बन्ध में बाँध दिया था। यित्रो के कार्य मूसा के लिए प्रोत्साहित करने वाले रहे होंगे, जो एक असत्कारशील जंगल में ढीठ लोगों की अगुवाई करने के बड़े कार्य से बोझिल था।

उसने उस समय अच्छी सलाह प्रस्तुत की जब मूसा को इसकी आवश्यकता थी। जब यित्रो ने मूसा के द्वारा उपयोग किए जाने वाली न्याय प्रणाली को देखा, तो उसने कुछ समस्याएँ देखीं और परिवर्तनों का सुझाव दिया। उसने मूसा को छोटे

मुकद्दमों का न्याय करने का अधिकार ऐसे अन्य पुरुषों को सौंपने को कहा जो उस कार्य के योग्य थे, ताकि मूसा स्वयं बड़े मामलों पर ध्यान लगा सके। मूसा को इस बात का श्रेय जाता है, उसने अपने ससुर की सलाह को स्वीकार किया।

संभवतः उसने मूसा को जंगल में भटकते समय एक मार्गदर्शक प्रदान किया था। गिनती 10:29-32 वर्णन करता है कि मूसा ने यित्रो के पुत्र, होबाब को मार्गदर्शक का कार्य करने का प्रस्ताव दिया था, परन्तु यह ये नहीं कहता कि उसने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया कि नहीं।

उपसंहार। परमेश्वर ने जब मूसा को सहायता की आवश्यकता थी तो उसे सहायता प्रदान करने के लिए यित्रो के माध्यम से परमेश्वर ने अपनी कृपा से कार्य किया। यित्रो का उन गैर-इस्राएली लोगों के साथ एक स्थान है जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों के प्रति सहायक थे। राहाब ने यरीहो में इस्राएली गुप्तचरों की सहायता की (यहोशू 2)। हेगे राजा के हरम का प्रबन्धक था और उसने एस्तेर पर अनुग्रह किया (एस्तेर 2:8, 9)। "कर्मचारियों के सेनापति" ने दानिय्येल के प्रति अनुग्रह और दया दिखाई (दानिय्येल 1:9)।

परमेश्वर के कार्य में सहायकों की आवश्यकता पड़ती है। महान व्यक्तियों को सहायकों की आवश्यकता पड़ती है। हो सकता है आपको अन्य लोगों के द्वारा "महान" न समझा जाए, परन्तु आप किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता कर सकते है जो "महान" है। आप योनातान जो दाऊद की सहायता करता है, बरनबास जो पौलुस को प्रोत्साहित करता है, अन्द्रियास जो पतरस को मसीह के पास लाता है, हारून या हूर जो मूसा के हाथों को पकड़े रहते हैं, या एक यित्रो जो एक अगुवे की सहायता ठीक उस समय करता है जब उसे इसकी आवश्यकता है।

हमें इस विषय में सचेत रहना चाहिए कि परमेश्वर के लोगों की सहायता असामान्य क्षेत्रों से आ सकती है। हमें इस बात का एहसास भी होना चाहिए कि यदि हम सहायता कर सकते हैं तो हमें दूसरों की सहायता भी करनी चाहिए।

संगठित होना (अध्याय 18)

निर्गमन 18 ऐसे कई सिद्धांतों के विषय में सिखाता है जो स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर का कार्य करने के लिए संगठित होने में सहायता कर सकते हैं। (1) मूसा ने यित्रो को सुना और उसकी सलाह पर कान लगाया। उसी प्रकार, अगुवों का अवश्य ही अन्य लोगों सुनने और सलाह लेने की इच्छा रखने वाला होना चाहिए यहाँ तक कि तब भी जब सहायता असंभव स्रोतों से आती है। (2) यित्रो और इस्राएल के अगुवों ने प्रत्यक्ष रूप से एक वाचा बाँधी। उसी के समान ही कलीसियाओं को अन्य लोगों के साथ सहभागिता की रचना करने का इच्छुक होना चाहिए जो उन्हें उनका उद्देश्य पूरा करने में उनकी सहायता कर सकते हैं। (3) मूसा को केवल उस बात पर ध्यान लगाने के लिए कहा गया था जिसे करने के लिए वह विशिष्ट रूप से योग्य था। उसी प्रकार, आज के अगुवों को पाना अधिकांश समय और प्रयास उस विशिष्ट प्रतिभा का उपयोग करने में देना चाहिए जो परमेश्वर ने उन्हें दी है। (4) मूसा ने छोटे मुकद्दमों का न्याय करने का अधिकार

अन्य लोगों को सौंप दिया। इसी प्रकार, आज अगुवों को सौंपना सीखना चाहिए। (5) जिन लोगों को मूसा ने जिम्मेदारी सौंपी थी उनका विशेष तौर पर योग्य होना आवश्यक था। ऐसे ही, कलीसिया के अगुवे जिन्हें आज जिम्मेदारी सौंपते हैं उन्हें उस काम के योग्य होना चाहिए जो करने के लिए उन्हें बुलाया गया है। इस प्रकार के कुछ नेतृत्व के नए नियम के एक उदाहरण के लिए, देखें प्रेरितों के काम 6:1-7.

यित्रो, एक भला पुरुष (अध्याय 18)

मूसा के ससुर के चरित्र की कुछ विशेषताएं आज भी हमारे अनुकरण के योग्य हैं।[19] यित्रो ने निम्नलिखित कार्य किए:

1. "वह परमेश्वर और उसके लोगों के विषय में सूचित रहा" (18:1)
2. "मूसा के अपनी पत्नी और पुत्रों के दावे को स्वीकार किया" (18:2-4)
3. "विनम्र" था (18:5-8)
4. "दूसरों की आशीष में आनन्द किया" (18:9)
5. "यहोवा की स्तुति की" (18:10, 11)
6. "आराधना की" (18:12)
7. "अच्छी सलाह" दी (18:13-22)
8. "परमेश्वर के अंतिम और सर्वोच्च अधिकार को स्वीकार किया" (18:23)।

मूसा के पुत्रों के नाम (18:3, 4)

मूसा के दो पुत्रों को नाम दिए गए "गेर्शोम," जो एक "परदेशी" होने का सन्दर्भ देता है, और "एलिएजेर," जिसका अर्थ है "परमेश्वर मेरा सहायक है।" ये नाम मिद्यान में मूसा की स्थिति का अच्छे से वर्णन करते हैं। वह एक पराए देश में एक "परदेशी" था, और परमेश्वर ने उसे फ़िरौन के हाथ से छुड़ाने के द्वारा उसकी सहायता की। मसीही, भी, इस संसार में "बाहरी या परदेशी" हैं (1 पतरस 2:11)। हमें भी परमेश्वर के द्वारा, मृत्यु से छुड़ाया गया है।

वे कार्य "जो अच्छे तो नहीं" परन्तु पापमय भी नहीं है (18:17)

जब यित्रो ने कहा, "जो कार्य तू करता है वह अच्छा नहीं," उसका तात्पर्य ये नहीं था कि अगुवाई के प्रति मूसा का दृष्टिकोण पापमय या गलत था। हालाँकि, यह अच्छा नहीं था क्योंकि यह निष्फल और अप्रभावी था। यद्यपि, कुछ कार्य जो हम करते हैं वे पापमय तो नहीं हो सकते, परन्तु हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि वे "अच्छे नहीं" हैं, उस भाव में कि वे इच्छा अनुसार परिणामों को प्राप्त नहीं करते। उदाहरण के लिए, कल्पना करें, एक मसीही ने प्रभु की आज्ञा "जाओ जाकर ... प्रचार करो" (मरकुस 16:15) का पालन करने का निर्णय लिया और एक सुसमाचार प्रचारक बनने का निश्चय किया, परन्तु उसने अगले महाद्वीप तक हवाई जहाज, नाव के द्वारा, या वाहन चलाकर जाने की बजाए चलकर जाने का निर्णय लिया। इसका अर्थ है यात्रा लाभदायक नहीं होगी। नया नियम हमें सिखाता है कि हमें बाइबल के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए, परन्तु यह

हमें ये भी सिखाता है कि हम प्रत्येक संभव साधन का प्रयोग करें। पौलुस ने कहा कि जैसे-जैसे हम प्रभु की कलीसिया का निर्माण करते हैं - हमें प्रभावी तरीकों में - बुद्धिमान होना चाहिए (1 कुरि. 3:10)। उसने हमसे उस समय सावधान रहने और बुद्धिमानी से बोलने का आग्रह भी किया जब हम अन्य लोगों से सुसमाचार के विषय में बात करते हैं (देखें कुलु. 4:5)। फलरहित उपायों का उपयोग करना और तैयारी के बिना बोलना एक पाप नहीं होगा; परन्तु यह अप्रभावी और निष्फल होगा, और इसी कारण "अच्छा नहीं।"

समाप्ति नोट्स

[1]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 137, 142. [2]नहूम एम. सरना ने दावा किया कि "व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 में दिए गए न्याय व्यवस्था की स्थापना का समानांतर विवरण विशेष रूप से बताता है कि पुनर्गठन होरेब, जो कि सीनै पर्वत भी, उस पर उनके ठहरने के निकट हुआ था" (नहूम एम, सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरिजिन्स ऑफ़ इजराएल* [न्यू यॉर्क: स्चोकेन बुक्स, 1996], 127)। [3]उपरोक्त, 128-29. [4]जेम्स बर्टन कोफ्फमन, *कमेंट्री ऑन एक्सोडस,* द सेकंड बुक ऑफ़ मोज़ेस (अबिलीन, टेक्सस: एसीयू प्रेस, 1985), 247. यह विचार पीटर एन्स के द्वारा भी समर्थित है, *एक्सोडस,* द NIV एप्लीकेशन कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2000), 371. [5]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 244. [6]उपरोक्त, 239, 244. [7]डब्ल्यू. एच. जिस्पेन, *एक्सोडस,* ट्रांस. एड वैन डेर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफ्रेंस लाइब्रेरी, जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1982), 174. [8]डरहम, 245. [9]कोफ्फमन ने बलपूर्वक तर्क दिया कि, चूँकि अभी तक मूसा की व्यवस्था नहीं दी गई थी तो मेल्कीसेदेक के समान ही, यित्रो भी यहोवा का एक वैध याजक था जिसके पास बलिदान चढाने का प्रत्येक अधिकार था। (कोफ्फमन, 244-46.) [10]जॉन एच. वाल्टन एंड विक्टर एच. मैथ्यूज़, *जेनेसिस-ड्यूट्रोनोमी,* द आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1997) 104-5.

[11]कुछ लोग ऐसा विश्वास करते हैं इस अवसर पर यित्रो याहवेहवाद का एक अनुयायी बन गया था। (कोफ्फमन, 245.) [12]डरहम, 245. [13]सरना, 128-29. वाचा भोजनों के अन्य उदाहरणों के लिए, देखें उत्पत्ति 26:30; 31:54. [14]इन्स, 371. [15]कोफ्फमन, 249. [16]सरना, 127. [17]कोल, 142. [18]सरना, 128. [19]विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 376-77.